केंचुआ पालन

एक अध्यात्म-मिश्रित भौतिक शौक

प्रेमयोगी वज्र

वैधानिक टिप्पणी (लीगल डिस्क्लेमर)

इस पुस्तक को किसी पूर्वनिर्मित साहित्यिक रचना की नक़ल करके नहीं बनाया गया है। फिर भी यदि यह किसी पूर्वनिर्मित रचना से समानता रखती है, तो यह केवल मात्र एक संयोग ही है। इसे किसी भी दूसरी धारणाओं को ठेस पहुंचाने के लिए नहीं बनाया गया है। पाठक इसको पढ़ने से उत्पन्न ऐसी-वैसी परिस्थिति के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे। हम वकील नहीं हैं। यह पुस्तक व इसमें लिखी गई जानकारियाँ केवल शिक्षा के प्रचार के नाते प्रदान की गई हैं, और आपके न्यायिक सलाहकार द्वारा प्रदत्त किसी भी वैधानिक सलाह का स्थान नहीं ले सकतीं। छपाई के समय इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ सही हों व पाठकों के लिए उपयोगी हों, फिर भी यह बहुत गहरा प्रयास नहीं है। इसलिए इससे किसी प्रकार की हानि होने पर पुस्तक-प्रस्तुतिकर्ता अपनी जिम्मेदारी व जवाबदेही को पूर्णतया अस्वीकार करते हैं। पाठकगण अपनी पसंद, काम व उनके परिणामों के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। उन्हें इससे सम्बंधित किसी प्रकार का संदेह होने पर अपने न्यायिक-सलाहकार से संपर्क करना चाहिए।

पुस्तक परिचय

इस पुस्तक में केंचुआ-पालन से सम्बंधित सारी जानकारियाँ हैं। लेखक ने 2-3 सालों तक खुद केंचुआ पालन किया था। उस दौरान लेखक को बहुत से भौतिक व आध्यात्मिक अनुभव हुए। बेशक लेखक ने बहुत सी जानकारियां सम्बंधित विभाग के अधिकारियों से और इंटरनेट से प्राप्त कीं, यद्यपि उन्हें दैनिक व्यवहार में ढालने का काम स्वयं लेखक ने ही किया। लेखक का मानना है कि इस लघु पुस्तक को पढ़कर कोई भी व्यक्ति केंचुआ-पालन में पारंगत हो सकता है।

केंचुआ खाद बनाना एक बहुत ही मनोरंजक शौक है। केंचुआ खाद निर्माण का भी एक अपना दर्शन है। केंचुए रात-दिन मेहनत करते रहते हैं, ताकि ईश्वर के द्वारा निर्मित अभूतपूर्व पृथ्वी ग्रह सही-सलामत रह सके, और लगातार प्रगति कर सके। केंचुए पर्यावरण प्रेमी होते हैं। वे बदले में किसी भी विशेष लाभ की अपेक्षा नहीं रखते। उन्हें तो बस खाने के लिए रूखा-सूखा जैविक कचरा और पीने के लिए थोड़ा सा पानी चाहिए होता है। यहाँ तक कि जीवों के जिस मल-मूत्र से सभी जीवधारी दूर भागते हैं, वे उसे भी परिष्कृत करके उससे उत्तम प्रकार की खाद बना देते हैं। उस खाद में अनेक प्रकार के लाभकारी जीवाणु होते हैं। उस खाद से पेड़-पौधों को सारे पोषक तत्त्व उचित मात्रा में प्राप्त हो जाते हैं। इस प्रकार से केंचुए बड़े से बड़े परिष्करण यंत्र को भी काम के मामले में पछाड़ देते हैं। एक प्रकार से केंचुए निस्स्वार्थ भाव से पर्यावरण की सहायता करते हैं। वे जमीन की सबसे ऊपर की मृदा का निर्माण करते हैं।

मित्रो, केंचुआ खाद निर्माण का शौक मुझे तब चढ़ा था, जिस समय हिमाचल प्रदेश का कृषि विभाग लगभग 30 फीट बाय 6 फीट के केंचुआ खाद यूनिट पर अधिकतम 30,000 रूपए की सब्सिडी दे रहा था। उस पर लोहे की चद्दर का छत भी बना होता था, और साथ में बाहर को, यूनिट के अन्दर डाले गए अतिरिक्त सिंचाई के पानी की निकासी को इकठ्ठा करने वाला एक छोटा सा पिट भी होता था। वह जल काले रंग का, बहुत गुणकारक व पौष्टिक होता था। कीड़े भगाने के लिए भी उसकी स्प्रे सब्जी के ऊपर की जा सकती थी। उस योजना को प्राप्त करने के लिए लाभार्थी के नाम जमीन होना जरूरी था। जिस जगह पर केंचुआ खाद यूनिट बनाना होता था, उस जगह का पर्चा-ततीमा पटवारी से प्राप्त करना होता था। एक विभागीय प्रपत्र को भी भरना होता था। ये सभी कागज विभाग में जमा करवाने होते थे। लगभग 5-6 महीने के अन्दर यह यूनिट स्वीकृत हो गया था। इस पर 25,000 रुपए की सब्सिडी मिली, क्योंकि विभाग के पर्यवेक्षकों ने उसमें कुछ कमियाँ दिखाईं। वह विभाग के द्वारा दर्शाए गए स्टैण्डर्ड से कुछ कम गुणवत्ता का था। मेरा अपना 15,000 रुपए का खर्चा आया। इस तरह से कुल मिलाकर मेरा 40,000 रुपे का खर्चा आया। यह इसलिए ज्यादा आया, क्योंकि केंचुआ खाद यूनिट सड़क से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर था। जिससे निर्माण सामग्री को ढोने के लिए खच्चरों का प्रयोग करना पड़ा, जिस पर 10,000 रुपए का खर्च आ गया। निर्माण सामग्री में ईंट, सीमेंट, रेत, लोहे की चद्दर और एंगल आयरन थे। उस यूनिट में तीन स्थान पर खडा एंगल आयरन (पिलर के तौर पर) लगाया गया। इसके दूसरी साइड भी ऐसे ही एंगल आयरन लगाए गए। फिर उनको टॉप पर आपस में जोड़कर एक जाला जैसा बनाया, जिस पर छत की चद्दर टिक सकती। एक कमी यह रही कि खर्चा कम करने के चक्कर में खड़े एंगल आयरन की मोटाई पौना इंच रखी गई। इससे शैड तेज हवाओं में उरे-परे झूलने लगता था। हालांकि, एक जाल बना होने के कारण छत कभी नीचे नहीं गिरा। अच्छा होता यदि खड़े एंगल आयरन एक इंच मोटाई के रखे गए होते। उरे-परे का जाल बनाने के लिए तो कमतर साईज भी काफी था। उसकी ऊँचाई एक तरफ से 7 फीट थी, और दूसरी तरफ 6 फीट थी, ताकि सिर छत से न बजता, और छत पर पानी को बहने के लिए एक पर्याप्त ढलान भी मिल जाती।

उस यूनिट में बराबर आकार के 6 चैंबर थे, जो बीच-२ में ईंट की दीवार बना कर बनाए गए थे। फर्श को बहुत पतला रखा गया था। उसको बनाने वाले मसाले/मोर्टार मिक्चर में सीमेंट की मात्रा बहुत कम रखी गई थी, और

उसे बहुत पतला बनाया गया था। ऐसा इसलिए किया गया, ताकि फर्श से होकर अतिरिक्त पानी नीचे की जमीन में रिसता रहता, और फर्श पर पानी का जमावड़ा न हो पाता

ज्यादा पानी में केंचुए कम काम करते हैं, और मर भी सकते हैं, क्योंकि ज्यादा पानी में उन्हें सांस लेने के लिए पर्याप्त हवा/ऑक्सीजन नहीं मिलती। पूरे फर्श पर एक कोने की तरफ को डूबती हुई हलकी ढलान/स्लोप रखी गई थी। उस स्लोप वाली साईड में एक लम्बी नाली दीवार के बाहर पूरी लम्बाई में थी। उस नाली में भी पिट की तरफ को स्लोप रखी गई थी। हरेक चैम्बर में फर्श से जुड़ा हुआ एक ईंट की चौड़ाई के बराबर छेद बाहर को रखा हुआ था, जो बाहर की ड्रेनेज नाली में खुलता था। केंचुओं के लिए वहां से भी कुछ हवा अन्दर घुस सकती थी। यूनिट को मजबूती देने के लिए मुख्य घेरे की दीवारों की बाहरी सतह को सीमेंट का पलस्तर किया गया था। दीवार की अन्दर की सतह और चैंबर बनाने वाली अंदरूनी दीवारों की ईंटों पर पलस्तर नहीं किया गया था, ताकि खर्चा कम आता। मेरा अपना यह भी ख्याल था कि अतिरिक्त जल को ईंट सोख लेगी, और धीरे-२ थोड़े-२ पानी को केंचुओं के लिए छोड़ देगी। वैसे अंदरूनी सतह को भी पलस्तर कर सकते हैं। चैंबर की दीवारों में बहुत सारे छेद रखे गए थे, जो ईंट की चौड़ाई के आकार के होते थे। एक चैंबर में जब खाद पूरी तैयार हो जाती थी, और वहां कच्चा गोबर-मिश्रण समाप्त हो जाता था, तब वे खुद दूसरे चैंबर को चले जाते थे। शायद उन्हें कच्चे गोबर की गंध खींचती थी। बाहरी दीवार में जो ड्रेनेज के लिए छेद था, उससे केंचुओं के भागने की आशंका मुझे शुरू-२ में होती थी। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। क्योंकि केंचुए खाने-पीने की चीजें छोड़कर कहीं नहीं जाते। गोबर-चैंबर की ऊँचाई अढाई फीट रखी गई थी। अधिकतम हवा इतनी ही मोटाई तक घुस पाती है, जो केंचुओं के सांस लेने के लिए जरूरी है। पर मैंने देखा कि केंचुए डेढ़ फीट की गहराई तक ही बढ़िया खाद बनाते हैं। उससे नीचे तो वे कम और मजबूरी में ही जाते हैं। अब तो विभाग ने चैंबर की लम्बाई व चौड़ाई भी बहुत कम कर दी है। इससे केंचुए एक-दूसरे के ज्यादा नजदीक रह पाते हैं, जिससे ज्यादा अच्छा काम और ज्यादा प्रजनन कर पाते हैं। केंचुए अपनी चमड़ी से सांस लेते हैं। उसके लिए उनकी चमड़ी का गीला रहना बहुत जरूरी है।

एक नजदीकी किसान के पहले से चल रहे केंचुआ खाद यूनिट से अच्छी नसल के केंचुए लाए गए। वे अमरीकन होते हैं। केंचुओं से भरपूर 2-3 किलो गोबर एक लिफाफे में लाकर यूनिट के एक चैंबर में डाला गया। 2-3 महीने में वह यूनिट केंचुओं से भर गया। आमतौर पर यूनिट में केंचुए सीधे तौर पर नजर नहीं आते, क्योंकि वे किसी मनपसंद जगह पर इकट्ठे होकर छुपे रहते हैं। उनकी बनाई हुई खाद से ही उनकी उपस्थिति का अंदाजा लगता है। कहते हैं कि केंचुओं के लिए ज्यादा पानी नहीं चाहिए। पर मैंने देखा कि वे ज्यादा पानी पसंद भी करते हैं, कई बार। मध्यम नमी में ही वे भरपूर खाद बनाते हैं। जहाँ ज्यादा पानी रुका होता था, वहां पर केंचुओं के अंडे ही अंडे दिखते थे। नमी कम भी नहीं होनी चाहिए। वे खुद चैंबर में अनुकूल नमी, तापमान व हवा वाला स्थान ढूंढते फिरते हैं। जहाँ पर ये तीनों परिस्थितियां अच्छी हो, वे वहीँ पर बस जाते हैं।

केंचुए की औसत आयु लगभग 1-2 साल की होती है। बहुत से केंचुए प्रतिदिन पैदा होते रहते हैं, बहुत से बूढ़े होते रहते हैं, और बहुत से मरते रहते हैं। इससे जीवन की अस्थिरता और नश्वरता का प्रतिपल आभास होता रहता है, जिससे दार्शनिक दृष्टिकोण सुदृढ़ होता रहता है। साथ में, इससे प्रेरित होकर आदमी अपने जीवन को सफल बनाने के लिए क्रियाशील रहता है। वह अपने मानव जीवन से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने की चेष्ठ करता रहता है, जिसमें आध्यात्मिक लाभ भी मुख्य होता है।

मैंने केंचुआ खाद यूनिट के साथ ही, उसी की उंचाई के स्तर पर एक पानी का टैंक बनवाया। इसलिए उससे पानी ग्रेविटी से व पाईप से होता हुआ केंचुआ खाद यूनिट तक नहीं आ सकता था। इसलिए मुझे बाल्टियों से पानी ढोकर डालना पड़ता था। मैं फव्वारे युक्त बाल्टी का प्रयोग करता था। उससे बहुत सारा समय लगता था, तथा पर्याप्त पानी भी नहीं गिर पाता था। इसलिए मैं उसका आगे का फूल खोल कर फव्वारे की नली के मुंह पर हाथ रखकर सीधे ही सींचने लगा। यद्यपि टैंक से 15-20 कदम तक ही पानी ढोना पड़ता था, फिर भी मैं बहुत थक जाता था। तब मैं ग्रेविटी से स्वतः चलने वाले पानी का महत्त्व समझने लगा, और सोचने लगा कि काश टैंक थोड़ा सा भी ऊँचाई पर होता, तो मैं पाईप फिट करके निश्चिन्त होकर आस-पास में दूसरे काम कर लेता। कई बार टूलू पम्प लगाने का विचार आया, पर वह महन्गा पड़ता, क्योंकि मेरा यूनिट छोटा व घरेलु था।

वैसे यह बता दूं कि टैंक मैंने बहुत बाद मैं बनाया था। पहले तो मैं वहां 200 लीटर के दो ड्रम पानी के पाईप से भर लेता था। वह पानी पीने का था, और ऊंचाई वाले स्थान से आता था। वे पानी के ड्रम दो-तीन हफ्ते के लिए चल पड़ते थे। बाद में बने टैंक को मैं बारिश के, खुली जमीन पर बहते हुए पानी से ही भरता था। उसके निर्माण के बारे में आगे मनरेगा वाले भाग में या मनरेगा से सम्बंधित दूसरी पुस्तक में बताया जाएगा। उस वर्षा जल संग्रहण टैंक तक मैंने पूरी ऊपरी ढलान का पानी जोट रखा था। वैसा मैंने टैंक से ऊपर तक दोनों तरफ एक-२ तिरछी नाली खोदकर किया था। ऊपर की ओर वे नालियाँ बाहर की और फैल रहीं थी। उससे टैंक के लिए एक बहुत बड़ा कैचमेंट एरिया बन गया था। कई बार तो एक ही भारी बारिश से टैंक आधा भर जाता था। वह टैंक लगभग 20,000 लीटर केपेसिटी का था। बीच-२ में मैं उन नालियों से पत्ते वगैरह हटा कर उन्हें साफ कर लिया करता था, ताकि टैंक तक पानी के प्रवाह में दिक्कत न आती।

बरसात में तो यूनिट के लिए नाममात्र के पानी की जरूरत होती है, क्योंकि चारों तरफ हवा में पर्याप्त नमी होती है। सर्दियों के सूखे दिनों में कुछ ज्यादा पानी चाहिए होता है। ज्यादा पानी डालने से यूनिट का तापमान गिरने का डर भी बना रहता है। कम तापमान में केंचुए नाममात्र का काम करते हैं, और बढ़ते भी नहीं हैं। उनकी असली बढ़ोत्तरी और प्रजनन तो बरसात में ही होते हैं। उस समय यूनिट में चारों तरफ उनके अंडे ही अंडे दीखते हैं। वे पीले रंग के होते हैं, और साबूदाने के आकार के होते हैं। अगर परिपक्क अंडे को फोड़ो, तो उसमें से एक या दो सूक्ष्म केंचुए निकलते हैं। पहले मुझे लगता था कि जब केंचुए केंचुआ-चैंबर में बहुत ज्यादा बढ़ जाएंगे, तब क्या होगा। पर वैसा नहीं होता। उनकी संख्या स्वयं नियंत्रित होती है। वे एक आवश्यक व सुरक्षित सीमा के बाद बढ़ोत्तरी करते हुए मैंने

कभी देखे ही नहीं। इसी तरह, मुझे पहले उनके बारे में यह भ्रम था कि उनसे ग्लानि होती होगी, क्योंकि वे बड़े-२ व मोटे-२, सुस्त से मिट्टी के केंचुए होते होंगे। पर वैसा नहीं है। वे मिट्टी के केंचुए नहीं होते। वे तो पतले व छोटे से, बड़े चुस्त, व रोचक होते हैं। उनसे ग्लानि नहीं होती।

बरसात में तो मैं यूनिट को सींचता ही नहीं था। ज्यादा से ज्यादा यदि शुष्क दिन होते, तो महीने में एक बार फव्वारे से पानी की महीन बुहार छोड़ देता था, ताकि यूनिट की ऊपर वाली कच्ची सतह (बिछौना आदि) पर हलकी नमी रह सकती। सर्दियों में मैं हफ्ते के एक दिन यूनिट की अच्छी सिंचाई कर लेता था। एक चेंबर में 15 लिटर के दो फव्वारे डाल देता था। गर्मियों में मैं हफ्ते के दो दिन यूनिट की गहरी सिंचाई कर लेता था। एक चैंबर में 4-5 फव्वारे डाल देता था।

पहले मुझे लगता था कि कहीं चिड़िया, कौवे, सांप, नेवला, गोह आदि जानवर केंचुओं को न खा जाएं। पर ऐसा नहीं हुआ। केंचुए बहुत चालक होते हैं। वे खुली सतह पर कभी नहीं रहते। वे एकदम से गहराई में चले जाते हैं। एक वजह यह भी रही होगी कि यूनिट के ऊपर छत की वजह से जानवर न आए हों। वैसे कई जगह ऐसी शिकायतें मिलती हैं। मेरे पास तो बिना छत के दूसरे यूनिट पर भी किसी जानवर ने हमला नहीं किया। शायद जगह-२ पर निर्भर करता है। सांप तो शायद ही केंचुओं को खाए। सबसे ज्यादा डर तो गोह का ही रहता है। क्योंकि वह अपने पंजों से कम्पोस्ट को खोदकर केंचुओं को ढूंढ सकती है।

केंचुआ-भक्षक कीड़े तो कम्पोस्ट के अन्दर ही पैदा होते रहते हैं। सबसे हानिकारक सेंटीपीड है। यह बाल पेन के रिफल के आकार जितने तक लम्बे व मोटे हो सकते हैं। इसके सैकड़ों पैर दोनों तरफ पूरे शरीर में लाइन में लगे होते हैं। वे सांप की तरह व बहुत तेज भागते हैं। उन्हें देखते ही कुचल देना चाहिए। हाथ लगने पर वे डसते भी हैं। ऐसा लगता है कि मधुमक्खी ने काटा है। पर दर्द उससे भे तेज और ज्यादा तेरी तक बनी रहती है। एक बार तो मुझे खाद को निकलते समय एक बिच्छू भी मिला था। अच्छा रहता है, यदि हाथ में चमड़े के दस्ताने पहने जाएं। ऐसा ही दूसरा हानिकारक कीड़ा मलेशा (पहाड़ी भाषा में) है। यह फसल को भी हानि पहुंचाता है। यह काजू की तरह गोल मुड़ा रहता है। सफेद होता है। आंख के बिन्दु काले होते हैं। स्पंजी होता है। लगभग काजू से चार गुना आकार तक का हो सकता है। इसे बाहर खुले में फेंक दें, ताकि जल्दी से मिटटी में न घुस सके। चिड़िया इसे खाने दौड़ कर आती है। इसके द्वारा डसने की खबर नहीं है। सावधानी से, यूनिट के ऊपर का घास आदि कुदाली या दराती से हिला लेना चाहिए, क्योंकि सांप तो कहीं भी घास-फूस में छुपे हो सकते हैं। सीधा हाथ नहीं डालना चाहिए।

शुरू-२ में मैं चैंबर के ऊपर न चलकर बाहर-२ से चलकर उसकी सिंचाई करता था। मैंने सुना था कि ढेर को हवादार बनाए रखने के लिए उसे ज्यादा दबाना नहीं चाहिए। बाद में मैं खुलकर चलने लगा। मुझे तो कोई फर्क नहीं लगा। इसी तरह, मैंने सुना हुआ था कि भारी कम्पोस्ट के ढेर को महीने में एक बार पलटा भी देना चाहिए, ताकि वह हवादार बन सके, और पूरे ढेर में समान मात्रा में केंचुए पहुँच सके। उसमें बहुत मेहनत और ताकत लगती

थी। मुझे उससे लाभ की बजाय नुक्सान ही लगा, क्योंकि उससे कई बार कुदाल आदि की चोट से केंचुए मर जाते थे। वास्तव में, केंचुओं का अपना नेचुरल सिस्टम डिस्टर्ब हो जाता था। फावड़े का प्रयोग तो कभी नहीं करना चाहिए। उससे बहुत से केंचुए कट कर मर जाते हैं। हो सके, तो खेत में भी फावड़े का कम से कम प्रयोग करें, क्योंकि खेत की मिटटी में भी केंचुए घुमते रहते हैं। वास्तव में, केंचुए चारों तरफ घुमते हुए, खुद ही ढेर को टनल/सुरंग-युक्त व हवादार बनाते रहते हैं। उससे ढेर का तापमान भी सामान्य हो जाता है, और एक प्रकार से ढेर की मिक्सिंग भी खुद हो जाती है।

मैंने सुना था कि कम्पोस्ट में ज्यादा गर्मी पैदा होने से केंचुए मर जाते हैं। पर वास्तव में ऐसा नहीं होता। वे अपने लिए कोई न कोई सुरक्षित व ठंडा कोना ढूंढ ही लेते हैं। वैसे तो गोबर-युक्त कचरे के ढेर को सीधा यूनिट में नहीं डालना चाहिए। उसे 15 दिन तक बड़े ढेर में ऐसे ही बाहर पड़ा रहने दें। उस दौरान उसमें उच्च तापमान पैदा हो जाता है। उससे उसके बीमारी पैदा करने वाले कीटाणु व खरपतवार के बीज जल कर मर जाते हैं। वह ढेर नरम भी पड़ जाता है, जिसे केंचुए बहुत पसंद करते हैं। फिर भी यदि यूनिट के कम्पोस्ट में बहुत अधिक गर्मी लगे, तो ठन्डे पानी की सिंचाई करने से भी उसका तापमान गिर जाता है।

केंचुए किसी भी कार्बनिक पदार्थ को खा जाते हैं, बशर्ते वह सड़ने वाला होना चाहिए। केंचुए सड़ने की रफ़्तार को भी बढ़ा देते हैं। चीड़ वृक्ष की सूइनुमा पत्तियां, जो साधारण कम्पोस्टिंग के बाद भी जस की तस दिखती हैं, वे केंचुआ पिट में जल्दी व पूर्ण रूप से सड़ जाती हैं। इसलिए धीरे सड़ने वाले कम्पोस्ट के लिए तो केंचुआ पिट वरदान है। वास्तव में पत्तों के ऊपर सड़ी हुई परत को केंचुए लगातार खाकर उन्हें नंगा करते रहते हैं। साथ में उनकी विष्ठा का सड़ाने वाला कीटाणु भी पत्तों में मिल जाता है। इस तरह पत्ता जल्दी सड़ जाता है।

हैरानी की बात है कि केंचुए के दांत नहीं होते, फिर भी यह सख्त से सख्त जैविक पदार्थ को भी सड़ा देता है। वास्तव में वे अधसड़े जैविक पदार्थ के छोटे-२ टुकड़ों को एक प्रकार से चूस कर निगलते हैं। आप आराम से केंचुए को अपनी हथेली पर रख सकते हैं। इससे सिद्ध हो जाता है कि केंचुआ कितना अधिक भोला और अहिंसक जीव होता है। ये गुण हमें इससे सीखने चाहिए।

मैंने सुना था कि केंचुआ खाद डेढ़ महीने में तैयार हो जाती है। पर मुझे तो अढाई महीने से कम समय में कभी भी तैयार नहीं मिली, वह भी बरसात में मिली। सर्दियों में तो पूरे 5-6 महीने के मौसम में एक बार ही मुश्किल से तैयार होती थी। शायद दक्षिणी भारत या मैदानी क्षेत्रों में ज्यादा कम समय में तैयार हो जाती हो। गर्मियों में भी 3-4 महीने लग जाते थे। इसका कारण यह भी हो सकता है कि मेरे यूनिट की गहराई अढाई फीट थी। उससे केंचुए दो शिफ्टों में खाद बनाते थे। पहली शिफ्ट में वे ऊपर की डेढ़ फीट की परत सड़ाते थे। फिर जब उससे हवा नीचे को क्रोस हो जाती थी, और वह डेढ़ फीट की परत सिकुड़कर आधा फीट की रह जाती थी, तब केंचुए दूसरी शिफ्ट में

निचले वाली 1 फूट की परत सड़ाते थे। केंचुआ खाद बनने के बाद वह मूल आकार से लगभग एक तिहाई से एक चौथाई तक सिकुड़ जाती है।

मैं हरेक पिट को बीच-२ में चैक भी करता रहता था। मैं ऊपर से डाला गया एक बिछौना हटा कर, हाथ से व कुदाली से 2-4 इंच की गहराई का जायजा लेता था, किसी एक स्थान पर। जब केंचुआ खाद तैयार हो जाती है, तब वह चाय-पत्ती की तरह दानेदार व भुरभुरी हो जाती है। ऊपर से बिछौना इसलिए रखा जाता है, ताकि केंचुओं को सुरक्षा मिले और तापमान भी बना रहे। सर्दियों में उसकी मोटाई बढ़ा दी जाती थी, ताकि अन्दर कुछ गर्माईश बनी रहती। कई बार यदि नीचे गोबर में ज्यादा हीट बने तो केंचुए ऊपर आकर बिछौने में सुरक्षित हो जाते हैं। वैसे तो वे कुछ गहराई में रहना ही पसंद करते हैं। जहाँ मेरा यूनिट था, वहां नम, छायादार, व सीधी हवा से रहित स्थान था। ऐसी जगह पर केंचुए ज्यादा खुश रहते हैं। पर वहां धुप भी लगनी चाहिए, ताकि सर्दी में तापमान न गिरे। मेरे स्थान की यही कमी थी कि वहां सर्दियों में धुप कम आती थी। मैंने पोलीशीट के परदे लगाने के बारे में भी सोचा, पर वह छोड़ दिया, क्योंकि वह महंगा व अव्यावहारिक होता। इतना मैंने जरूर किया कि दीवार व गोबर के ढेर के बीच में मोटे तिनकों (स्ट्रा) का बिछौना पैक कर दिया, ताकि इन्सुलेशन बन जाती। दूसरा तरीका यह किया कि यूनिट की सतह के बिछौने पर मोटी जूट की बोरियां दाल दीं। इन उपायों से कुछ फायदा मिला।

जब किसी चैंबर में खाद तैयार हो जाती थी, तब उसकी सिंचाई उसे निकालने से 15-20 दिन पहले बंद कर देता था। उससे खाद की चिकनाहट ख़त्म होकर वह भुरभुरी हो जाती है। इससे उसे निकालने और छानने में आसानी होती है। केंचुए भी धरातल की चिकनाहट की तरफ चले जाते हैं। एक चैंबर मैंने खाली रखा हुआ था, ताकि छानी हुई खाद को उसमें रख सकता। मैंने रेता छानने वाली बड़ी जाली का प्रयोग किया। खाली चैंबर में उसे फिट करके उस पर तैयार चैंबर की खाद तसले से ढोकर उसके ऊपरी छोर पर डालता। फिर मैं जाली को हाथ से थपथपाता था, जिससे वह मिक्चर जाली पर छनता हुआ नीचे की ओर लुढकता था। अंत में नीचे थोड़ा सा मोटा माल बचता था, जो छन नहीं पाता था। उसमें गोबर के छोटे-बड़े ढेले, पेड़ के अधसड़े छिलके, पेड़ों की मोटी व अधसड़ी टहनियां/टुकड़े, कुछ कंकड़, और सारे केंचुए होते थे। गोबर के ढेलों के अन्दर बहुत से केंचुए मिलते हैं। उसमें से कंकड़ बाहर फेंक कर, मैं उस 2-4 मुट्ठी भर मोटे माल को सड़ने के लिए कच्ची खाद के चैंबर में डाल देता था। जो खाद छन आती थी, वह साफ, गंध रहित व लिफाफे में पैक करने लायक होती थी। गंध तो यूनिट में कहीं भी नहीं होती थी। न ही मक्खी-मच्छर होते थे। पशुशाला में मक्खी-मच्छर न फैले, इसके लिए यह एक बढ़िया उपाय है। यूनिट पशुशाला से कुछ 100-200 मीटर की दूरी पर होना चाहिए। सीधा ही पशुशाला से गोबर उठाकर उसे प्रतिदिन यूनिट में डालते रहो। इससे पशुशाला के पास गोबर का ढेर नहीं लगेगा, जिससे वहां मक्खी-मच्छर नहीं होंगे।

कई बड़े फार्मों में तो बिजली की मोटर से चलने वाली छनन जाली भी लगाई जाती है। उसे कम स्पीड पर ही चलाना होता है, नहीं तो झटकों से केंचुए परेशान/कमजोर हो जाते हैं, और कई तो मर भी जाते हैं। वैसे कई लोग

इस तरीके को केंचुओं के लिए ठीक नहीं समझते। मेरे एक मित्र ने देसी तरीका अपना कर एक छनन यंत्र खुद बनाया था। उसने घरेलु मोटर को एक छनन जाली के साथ कुछ लोहे की छड़ों व पहियों की सहायता से जोड़ दिया था। हालांकि उसका भी यही कहना था कि उससे कोई विशेष लाभ नजर नहीं आता।

वास्तव में, मुझे उपरोक्त सभी क्रियाकलाप एक अनुभवी वृद्ध ने सिखाए थे। वास्तव में, वे हमारे घर में मासिक पारिश्रमिक पर काम करते थे। उन्होंने कभी किसी सरकारी योजना के अंतर्गत केंचुआ-खाद का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। मैं उनके साथ काम करते-करते सभी तरीके सीख गया था।

उपरोक्त छानने वाला तरीका मुझे कुछ मुश्किल व अव्यावहारिक लगा। वह तरीका छोटे लिफाफों में खाद को पैक करके दुकान में सीधा बेचने के लिए तो ठीक था। पर बाजार में उसकी मांग ही नहीं थी। लोग गमलों के लिए भी रासायनिक खादों पर भरोसा करते थे, क्योंकि वह एकदम रिजल्ट देती थी। कुछ लोग जो केंचुआ खाद के फायदे समझते थे, वे मैदानों से आई हुई सस्ती, हलकी गुणवत्ता की, व मिलावटी जैविक खाद खरीदते थे। इसलिए मुझे तो उसका प्रयोग अपने खेतों के लिए ही करना पड़ा। इसलिए तब मैं बिना छाने ही खाद को इकठ्ठा करने लगा। इसके लिए, पहले मैं 6 इंच की गहराई तक चैंबर की खुदाई करता था। 5 मिनट इंतजार करता था। उतनी देर में केंचुए खुदी हुई परत से नीचे चले जाते थे। वास्तव में, जहां पर खुदाई की होती है, वहां पर केंचुए कई दिनों तक नहीं लौटते। उस खुदी हुई परत को इकट्ठा करके खाली चैंबर में डाल देता था। फिर अगली 6 इंच की परत तक ऐसा ही करता। इस तरह से अंतिम 6 इंच की परत आ जाती। वहां पर केंचुओं की बड़ी भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। फिर मैं 2-2 इंच की परत को सावधानी से खोदता, ताकि केंचुओं को चोट न लगा करती। फावड़े का इस्तेमाल न करें। जो कुदाली प्रयोग करें, वह आगे से पैनी न हो। अंतिम दो इंच की फर्श वाली परत में तो जितना वजन खाद का होता था, उससे कहीं ज्यादा केंचुओं का होता था। उसको मैं पहले छानने लगा, ताकि मैं खाद का एक-२ कण इकठ्ठा कर सकता। फिर मैंने सोचा कि क्यों केंचुओं को परेशान किया जाए, और क्यों न उसे वैसा ही पड़ा रहने दूं। मैंने वैसे ही किया। जब उस चैंबर में कच्चा गोबर डाला, वे केंचुए गोबर खाने खुद ही ऊपर आ गए। उस अंतिम ढेर को ज्यादा दिन खाली नहीं रखना चाहिए, वर्ना केंचुओं को नुक्सान हो सकता है। कहते हैं कि पूरी सड़ी हुई केंचुआ खाद केंचुओं के लिए नुकसानदायक होती है। इसलिए उसमें जल्दी से कच्चा माल डालो, ताकि केंचुए उसे खाने ऊपर आ जाए।

केंचुआ खाद बहुत हलकी हो जाती है, इसलिए उसे ढोना बहुत आसान होता है। इसलिए मैंने उसे दूर के खेतों में डालने का निर्णय लिया। बाद में मेरा पोलीहाऊस तैयार हो जाने पर उसे पोलीहाऊस में डालने लगा। पोलीहाऊस में तो यह भरपूर लाभ देती है, क्योंकि यह बारिश के व खुले पानी से इधर-उधर को नहीं बहती, और धुप-हवा से भी नहीं सूखती। कच्चा गोबर भारी होता है, इसलिए यूनिट को पशुशाला के नजदीक होना चाहिए। मेरा यूनिट 200 मीटर की दूरी पर था, इसलिए गोबर ढोने में बहुत सी ताकत नष्ट हो जाया करती थी।

केंचुआ पालन का भी अपना एक दर्शन है। यह तांत्रिक दर्शन व कर्मयोग से मिलता-जुलता है। तंत्रयोग में कुण्डलिनी को नागिन के रूप की तरह माना गया है। वह नागिन की तरह शरीर में लचक के साथ चलती है। केंचुए भी नाग की तरह ही होते हैं। इसलिए केंचुए और कुण्डलिनी के बीच में आपसी सम्बन्ध हो सकता है। मुझे तो ऐसा ही लगा। केंचुआ पालन शुरू करने के बाद मेरी कुण्डलिनी तेजी से बढ़ने लगी।

दूसरे तरीके से देखने पर केंचुए महान कर्मयोगी होते हैं। वे जी-जान से अपने काम में लगे रहते हैं, और बदले में भोजन-पानी के इलावा किसी चीज की ख्वाहिश नहीं रखते हैं। वे उस रूखे-सूखे अपशिष्ट पदार्थ से ही गुजारा कर लेते हैं, जो किसी के काम के नहीं होते। इस तरह से वे वातावरण को साफ-सुथरा रखते हैं। यदि वे सफाई में मदद न करें, तो बहुत सी गंभीर बीमारियों के फैलने का अंदेशा बना रहता है। वे वफादार नौकर होते हैं, और निष्काम भाव से कर्म में तत्पर रहते हैं। आदमी तो मालिक के डर से ही काम करता है। अपना कर्तव्य समझ कर काम करने वाला आदमी तो विरला ही होता है। केंचुए के पास मालिक को हर घड़ी डंडा लेकर खड़े होने की जरुरत नहीं होती। उन्हें तो बस भोजन-पानी डाल दो, तो वे कई दिनों-हफ्तों तक बिना कुछ मांगे अपना काम करते रहेंगे। उतने समय में मालिक चाहे तो विदेश घूम कर वापिस आ जाए।

केंचुए को घर के अन्दर भी पाला जा सकता है। एक प्लास्टिक के छोटे व साधारण डस्टबिन में भी उन्हें पाला जा सकता है। उसके पेंदे में कुछ छेद करें, जिससे एक्स्ट्रा पानी बाहर निकलता रहे। उसे किसी ट्रे आदि के ऊपर रखें, ताकि वहां जमीन पर एक्स्ट्रा पानी न गिरता रहे। उस पानी को पुनः केंचुआ बिन में जरुरत पड़ने पर वापिस डालते रहें, ताकि उसकी पौष्टिकता बर्बाद न होए।

इस किचन फार्मिंग से जहाँ शौक पूरा होगा, और सूक्ष्म तांत्रिक शक्ति प्राप्त होगी, वहीँ पर उससे प्राप्त जैविक खाद से गमले के फूलों का अच्छा विकास होगा, और किचन गार्डन में भी भरपूर सब्जियां उगेंगी।

वैसे तो ज्यादातर केंचुआ पालन खुले में किया जाता है। खुला खेत होता है। उस पर कोई छत नहीं होती। उसमें पैदावार भी ज्यादा होती है, और केंचुए की बढोत्तरी भी अधिक होती है। परन्तु उसकी खाद की गुणवत्ता कम होती है। उसके बहुत से पोषक तत्त्व पानी के साथ इधर-उधर बह जाते हैं, और हवा-धुप से उड़ भी जाते हैं।

केंचुए खुली जगह में भी केवल नमी वाली मिट्टी के अन्दर ही इधर-उधर भाग सकते हैं। वे जमीन के ऊपर नहीं भागते, और न ही सूखी मिट्टी में घुसते हैं। यदि नीचे पथरीली जमीन हो, तो भी वे नीचे नहीं भाग पाते। वैसे वे थोड़ी दूर ही गए होते हैं, छुपने के लिए। खाद हटाने की हलचल से डरकर वे नीचे की मिट्टी में घुस जाते हैं। जब नया जैविक पदार्थ वहां डाल दिया जाता है, तब वे 1-2 दिन में फिर से मिट्टी से ऊपर चढ़ जाते हैं।

एक जगह मैंने देखा कि एक 60 डिग्री की खड़ी ढलानदार सतह पर पत्थरों का कच्चा डंगा लगा हुआ था। वह जगह पशुशाला के एकदम बाहर थी। इसलिए अन्दर का सारा गोबर व अन्य जैविक अपशिष्ट जब बाहर फेंका जाता था,

तो उस ढलान पर इकट्ठा हो जाता था। इससे वहां एक बड़ा सा ढेर बन जाता था। उसमें अनगिनत केंचुए होते थे। वे जल्दी से सारे कच्चे माल को खाद में बदल देते थे। जब उस खाद को हटाया जाता था, तब वे नीचे पत्थरों के बीच में घुस जाते थे। उन पत्थरों के बीच के छेद नमीदार व मुलायम खाद से भर हुए थे, जिसके नीचे नमीदार व मुलायम मिट्टी होती थी। जब नया कच्चा माल फिर से उस खाली सतह पर आ जाता था, तब वे पुनः भीड़ में ऊपर आकर सक्रिय हो जाते थे, और उसे जल्दी ही ठिकाने लगा देते थे।

उन बर्बाद होने वाले तत्त्वों में नाईट्रोजन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। उसकी कमी पौधों की पैदावार पर सबसे अधिक प्रतिकूल असर डालती है। खाद की गुणवत्ता चेक करने का सिस्टम अभी भारत में ठीक ढंग से नहीं पनपा ही। इस वजह से खुले स्थान में बनी खाद का मूल्य भी बंद स्थान में बनी खाद के बराबर ही मिलता है। यही कारण है कि लोग बंद फार्म को खोलने से कतराते हैं। बंद फ़ार्म को बनाने में निवेश भी अधिक करना पड़ता है, और उसमें खाद भी कम बनती है। यद्यपि उसमें बनी खाद की गुणवत्ता उच्च कोटि की होती है। इसी तरह कई स्थानों पर तो लोग निकासी नालियों (ड्रेनेज पाईप्स) की गन्दगी को सुखा कर व उसे पीस कर केंचुआ खाद में मिला लेते हैं। इसकी जांच की सुविधा अधिकाँश स्थानों पर नहीं है। कहीं पर है, तो बहुत महँगी है। ग्राहक भी इस मामले में जागरूक नहीं हैं। इससे भी असली खाद-निर्माता हतोत्साहित हो जाते हैं। यद्यपि उपरोक्त छोटा केंचुआ खाद यूनिट शौक पूरा करने के लिए और दिव्य तांत्रिक शक्ति प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम है।

कई लोग सोचते हैं कि केंचुआ खाद चमत्कारी ढंग से काम करती है। वास्तव में चमत्कार तो रासायनिक खाद से ही दीखता है, यद्यपि वह बाहर-२ से ही होता है, थोड़े समय के लिए होता है, और पर्यावरण की भारी कीमत पर होता है। केंचुआ खाद तो धीरे-२ व सम्पूर्णता के साथ असर करती है। केंचुआ खाद मिलाने से रेतीली मिट्टी में भी चिकनी मिट्टी के गुण आ जाते हैं, क्योंकि केंचुआ खाद में चिकनाहट होती है। इसी तरह, ज्यादा चिकनी मिट्टी भी केंचुआ खाद डालने से अतिरिक्त चिकनाई को खो देती है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि केंचुआ खाद के कण चिकनी मिट्टी के कणों के बीच में पक्के बैठ जाते हैं, और उन्हें जुड़कर ढेला बनाने से रोकते हैं। ऐसा माना जाता है कि इसमें ऐसे जैव रसायन भी होते हैं, जो पत्थरों को मिट्टी में बदलने में सहायता करते हैं। ऐसा भी माना जाता है कि केंचुए के पेट में हवा की नाईट्रोजन को फिक्स करने वाले कीटाणु भी काम करते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि उनके पेट में निर्वात (एनएयरोबिक)/वायुरहित परिस्थिति होती है। नाईट्रोजन फिक्स करने वाले कीटाणु ऐसी ही परिस्थिति में पनपता है। वैसे तो उनके पेट में और भी विभिन्न श्रेणियों के लाभदायक कीटाणु होते हैं। उनसे ऐसे होरमोन भी बनते हैं, जो पौधों की बढौतरी में सहायक होते हैं। उनकी विष्ठा से होते हुए वे खेत की मिट्टी में घुल-मिल जाते हैं, और वहां पर लम्बे समय तक बहुत से लाभदायक काम करते रहते हैं। तभी तो कहते हैं कि केंचुआ खाद पूरी तरह से सूखने नहीं देनी चाहिए। उसमें हलकी सी नमी रहनी चाहिए। इसलिए स्टोर करते समय उस पर कई बार पानी का हल्का छिड़काव भी करना पड़ता है, खासकर गर्मियों में। खेत में मिलाते समय उसकी मिट्टी में भी नमी होनी चाहिए। खाद को एकदम से मिट्टी में मिला लेना चाहिए। ऐसा हल चला कर भी किया जा सकता है। यदि वह खेत की सतह पर पड़ी रहेगी, तो वहां पर सूख जाएगी। उससे कीटाणुओं की हानि तो होगी ही, उसकी

नाईट्रोजन भी हवा में उड़ जाएगी। यूरिया से भी नाईट्रोजन मिलती है, पर वह रासायनिक होने के कारण हानिकारक होती है।

जिस प्रकार योगी दत्तात्रेय के चौबीस गुरुओं में बहुत से गुरु निर्जीव पदार्थों (हवा, बादल आदि) के रूप में थे और बहुत से गुरु छोटे जानवरों (मछली आदि) के रूप में थे, उसी प्रकार मेरे गुरु केंचुए क्यों नहीं हो सकते? केंचुओं से मुझे कई प्रकार की शिक्षाएं मिलीं। एक शिक्षा यह भी मिली कि अपना खाना चबा-२ कर खाना चाहिए। दरअसल केंचुआ खाद में जो चिकनाहट व नमी होती है, उसमें उसके मुंह से निकली लार का मुख्य योगदान होता है। इसका अर्थ है कि यदि हम ज्यादा समय तक मुंह में खाना चबाएं, तो ज्यादा लार भोजन के साथ मिश्रित होगी। उससे वह पाचक अंगों में आसानी से गुजरेगा, जिससे वह ढंग से पचेगा, और साथ में कब्ज भी नहीं करेगा। ऐसा सोचकर मैंने शुरू में रोटी को अलग से आराम-२ से चबा कर खाना शुरू किया। इससे सूखी रोटी की रगड़ से लार अधिक बनता था। फिर दो रोटियों के बीच में थोड़ा सा घी लगाकर उन दोनों को एकसाथ रोल करके खाने लगा। उसके बाद एक गिलास पानी को आराम से पीता था। उससे ज्यादा फायदा महसूस हुआ। चावल को मैं अलग से, सब्जी को अलग से, और दाल को अलग से खाता था। इससे हरेक प्रकार के अन्न का अपना अलग/विशेष व कुदरती स्वाद मिलता था। अंत में थोड़ा व सब कुछ मिश्रित करके खा लेता था। बहुत मजा आता था, और बहुत संतुष्टि मिलती थी। वैसे तो मैं कुण्डलिनी योग भी करता था, जिससे भी कुछ फायदा मिलता था। ऐसा करने से पहले तो मेरा मन अन्न से भरता ही नहीं था कभी। शायद पहले लार ग्रंथियों में अतिरिक्त लार बची रहती थी, जो मन की भूख को मिटने नहीं देती थी।

फ़ार्म में केंचुए कई बार दो-२ के जोड़ों में भी दिख जाते हैं। वे नाग-नागिन की तरह एक-दूसरे से बड़ी ख़ूबसूरती से लिपटे होते हैं। वास्तव में वे प्रजनन कर रहे होते हैं। एक बार कृषि-विभाग के द्वारा लगाए गए कैम्प में मैं बतौर अतिथि बोल रहा था। बीच में मैंने किसान भाइयों को बताया कि केंचुआ खाद फ़ार्म खोलने से मनोरंजन भी होता रहता है, और वे रंग-बिरंगी फिल्मी दृश्य दिखाते रहते हैं। ऐसा सुनकर वे बड़े रोमान्चित होकर हँसने लगे, और कुछ तो तालियाँ बजाने लगे। मेरी उस बात से बहुत से लोग केंचुआ फ़ार्म खोलने के लिए प्रेरित हुए, और उसके लाभ देखकर सभी सोचने लगे कि आजतक उन्होंने उस पर विचार क्यों नहीं किया था। मेरे उस व्यावहारिक व प्रेरक भाषण की सभी उपस्थित अधिकारियों ने भूरी-२ प्रशंसा की थी। मैं उसका पूरा श्रेय अपने गुरु महाराज को देता हूँ।

अब मैं अपनी फ़ार्म की दिनचर्या बताता हूँ। प्रतिदिन तो मैं उसमें काम करता ही नहीं था। २-३ महीने बाद कभी जब खाली चैंबर को गोबर से भरना होता था, तभी २-३ दिन के लिए लगातार गोबर बगैरह ढोना पड़ता था। मुझे हफ्ते भर तक रोजी-रोटी और कमाई के मामले में घर से बाहर रहना पड़ता था। केवल रविवार के लिए ही घर आता था। उस दिन मैं केंचुआ खाद यूनिट का निरीक्षण करता। जरुरत होने पर उसमें पानी डालता, खाद को अलग करता, खाद को छानता, और कच्चा गोबर दूर से ढो कर यूनिट में डालता। मैं तैयार खाद को खेतों में या पोलीहाऊस में डालता। इस तरह से मेरा दिन आराम से, व्यस्तता से और सकारात्मक रूप से बीत जाता। आस-पास

के लोग भी मेरी लगन, मेहनत, प्रसन्नता और मेरे सामाजिक मेल-जोल को देखकर प्रसन्न हो जाते। केंचुआ खाद यूनिट से भी इन गुणों के विकास में सहायता मिली थी। शायद उन्हें भी केंचुआ खाद बनाने के लिए अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरणा मिलती हो। यद्यपि कुछ झिझक के कारण उन्होंने उस सरकारी योजना का लाभ नहीं उठाया। एक तो आलस के कारण वे उसके लिए कागज़-पत्र ही नहीं जुटा पाते थे। दूसरा, वे समझते थे कि उनकी पशुशाला के बाहर खुले पड़े गोबर के ढेर में केंचुए खुद ही पलते थे, फिर बंद यूनिट बनाने की क्या जरुरत थी। वे उसके फ़ायदे बताए जाने पर भी समझ नहीं पाते थे। तीसरी वजह थी कि वे उस काम को घटिया, कीड़े-मकोड़े वाला काम समझते थे। खैर कुछ भी हो, पर लोग मेरा काम देखकर खुश व खुले-२ से रहते थे। इसका कारण था, केंचुओं की अदृश्य प्रेरणा से मेरा कर्मयोगी बनना। पूरे हफ्ते भर सारा काम वे एक निष्काम कर्मयोगी की तरह करते रहते थे, और फायदा उसका मुझे मिल रहा होता था।

पहले से ही, सप्ताह के जिस दिन मैं घर में रहता था, उस दिन मैं वह काम करना चाहता था, जो केवल मेरा होता पूरी तरह से। वह किसी के सहयोग वाला काम न होता। मैंने परिवार वालों के साथ मिलकर भी बहुत समय काम किया था। पर उस काम की कोई गिनती नहीं होती थी। वह सारा काम परिवार वालों का माना जाता था, मेरा अपना नहीं। वे काम थे, जंगल से लकड़ी, घास आदि लाना; पशु चराना, व खेत-खलिहान के अन्य काम। केंचुआ-खाद के काम को केवल मैं ही करता था। अन्य लोगों को उसमें रूचि नहीं थी। इसलिए लोग उसे मेरा, अकेले का काम मानने लगे, और उसका श्रेय भी मुझे देने लगे। उससे मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलने लगी। अब मेरा सप्ताह का एक दिन केंचुआ खाद यूनिट के काम में ही अक्सर बीतता था। कभी-कभार जब बहुत कम समय बचता था, तब घर वालों की भी मदद कर लेता था।

एक बार मैंने स्वप्न में अपने फार्म के केंचुओं की आत्माओं से मुलाक़ात की। वे शांत अन्धकार की तरह होते हैं। उनके अन्दर एक विचित्र और अंधकारमय उजाला होता है। अपने जीवन के लिए अनुकूल परिस्थितियों के मिलने से उनके इन आत्म-गुणों में वृद्धि हो रही थी, ऐसा मुझे उस सपने में महसूस हुआ। वे वहां बहुत खुश थे। उन्हें अपने सभी अनुभव एक शांत, हसीं, हलके, दुःख-दर्द से रहित और आनंदमयी सपने की तरह महसूस होते हैं।



प्रेमयोगी वज्र के द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें

प्रेमयोगी वज्र के द्वारा लिखित अन्य पुस्तकें

1) शरीरविज्ञान दर्शन- एक आधुनिक कुण्डलिनी तंत्र (एक योगी की प्रेमकथा)

2) Love story of a Yogi (what Patanjali says)

3) Kundalini demystified (what Premyogi vajra says)

4) कुण्डलिनी विज्ञान- एक आध्यात्मिक मनोविज्ञान

5) kundalini science- a spiritual psychology

6) The art of self publishing and website creation

7) स्वयंप्रकाशन व वैबसाईट निर्माण की कला

8) कुण्डलिनी रहस्योद्घाटित- प्रेमयोगी वज्र क्या कहता है

9) पोलीहाऊस खेती- एक अध्यात्म-मिश्रित भौतिक शौक

10) ई-रीडर पर मेरी कुण्डलिनी वेबसाईट

11) my kundalini website on e-reader

साप्ताहिक रूप से नई पोस्ट (विशेषतः कुण्डलिनी से सम्बंधित) प्राप्त करने और नियमित संपर्क में रहने के लिए कृपया इस वेबसाइट, "demystifyingkundalini।com" को निःशुल्क रूप में फोलो करें / इसकी सदस्यता लें।

https://demystifyingkundalini।com/